# ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
# जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
# डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
# पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

**बुलेटिन संख्या–09**
**दिनांक– शुक्रवार, 30 जनवरी, 2026**

## विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 24.5 एवं 8.4 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 99.0 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 57.0 प्रतिशत, हवा की औसत गति 9.3 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 1.9 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 5.2 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 13.6 एवं दोपहर में 23.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

## मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
## (31 जनवरी–04 फरवरी, 2026)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 31 जनवरी–04 फरवरी, 2026 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमानित की अवधि में आसमान में हल्के बादल बन सकते है हलाकि सभी जिलों में मौसम के शुष्क रहने की सम्भावना है।
- अधिकतम तापमान 24 से 26 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 11 से 14 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पछिया हवा चलने का अनुमान है। औसतन 4–8 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है।

## • समसामयिक सुझाव

- शुष्क मौसम की संभावना को ध्यान में रखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे हल्दी एवं ओल की तैयार फसलों की खुदाई प्राथमिकता से करें। इसके साथ ही अगात राई–सरसों की तैयार फसलों की समय पर कटाई कर लें, जिससे उपज की गुणवत्ता बनी रहे और नुकसान से बचा जा सके।
- इस समय आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना अधिक रहती है, अतः किसान अपने बागानों में किसी भी प्रकार की कर्षण क्रिया न करें। बागानों में दीमक, मधुआ एवं दहिया कीट तथा पाउडरी मिल्ड्यू रोग की नियमित निगरानी आवश्यक है। जहाँ दीमक की समस्या हो, वहाँ क्लोरपाइरीफॉस 20 ईसी 2.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर मुख्य तने एवं उसके आसपास की मिट्टी में छिड़काव करें। मधुआ एवं दहिया कीटों के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल अथवा साइपरमेथ्रीन 10 ईसी 1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से समान रूप से छिड़काव करें। पाउडरी मिल्ड्यू रोग की रोकथाम के लिए घुलनशील गंधक (सल्फर) 80 डब्ल्यूपी 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से पत्तियों पर छिड़काव करें।
- रबी मक्का की फसल में जहाँ धनबाल एवं मोचा आ गई हो, वहाँ 40 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। 50–60 दिन की अवस्था वाली मक्का की फसल में भी 40 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ा दें। आलू–मक्का अंतर्वर्ती खेती में तैयार आलू की निकाई–गुड़ाई करें तथा मक्का में सिंचाई करने के 3–4 दिन बाद 40 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें।
- सरसों की फसल में लाही कीट के आक्रमण की संभावना रहती है। इसके बचाव हेतु डाइमेथोएट 30 ईसी दवा 1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। विलंब से बोई गई दलहनी फसलों में 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अंतराल पर दो बार करें।
- बसंतकालीन ईख की रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई के समय 15–20 टन सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करें, जिससे भूमि की जलधारण क्षमता बढ़ती है और पोषक तत्वों की उपलब्धता में सुधार होता है।
- पिछात बोई गई गेहूँ की फसल में यदि जिंक की कमी के लक्षण जैसे पौधों का रंग हल्का पीला दिखाई दे, तो 2.5 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 1.25 किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं 12.5 किलोग्राम यूरिया को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अंतराल पर दो बार साफ मौसम में छिड़काव करें। दीमक के प्रकोप की स्थिति में क्लोरपाइरीफॉस 20 ईसी दवा 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलोग्राम बालू में मिलाकर खड़ी फसल में समान रूप से प्रयोग करें।
- अरहर की फसल में फल मक्खी की नियमित निगरानी करें। इस कीट के मैगट बीजों को नुकसान पहुँचाते हैं, जिससे दाने खाने योग्य नहीं रहते और उपज में भारी कमी आती है। इसके नियंत्रण हेतु कार्टाप हाइड्रोक्लोराइड दवा 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आलू की अगात किस्मों की तैयार फसलों की खुदाई करें। बीज वाली फसल में ऊपर की लत्ती काट लें तथा खुदाई से 15 दिन पूर्व सिंचाई बंद कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की नियमित निगरानी करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगरानी आवश्यक है। इसके पिल्लू फलियों में जालीनुमा आवरण बनाकर अंदर ही अंदर दानों को खा जाते हैं, जिससे उपज में भारी कमी आती है। कीट प्रबंधन हेतु प्रकाश फंदा लगाएँ तथा प्रति हेक्टेयर 15–20 टी–आकार के पंछी बैठका (बर्ड पर्चर) स्थापित करें। अधिक प्रकोप की स्थिति में क्विनालफॉस 25 ईसी या नोवल्यूरॉन 10 ईसी 1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- सब्जियों में नियमित रूप से निकाई–गुड़ाई करें एवं आवश्यकता अनुसार सिंचाई करें। गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई के लिए खेत की तैयारी करते समय 150–200 क्विंटल गोबर खाद प्रति हेक्टेयर की दर से पूरे खेत में अच्छी तरह मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई के समय क्लोरपाइरीफॉस 20 ईसी दवा 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलोग्राम बालू में मिलाकर प्रयोग करें।

| | |
|---|---|
| आज का अधिकतम तापमानः 21.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.3 डिग्री सेल्सियस कम | आज का न्यूनतम तापमानः 10.4 डग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.1 डिग्री सेल्सियस अधिक |

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी